Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

24-1-2019
गुरुवार

❀ चैतन्य का महाकुंभ ❀

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - - -

प्राचीन काल से ही कुंभ मेले का बडा महत्व माना गया है, "सुर्य" की ऊर्जा की एक विषेष स्थिती मे इस "कुंभ" मेले का आयोजन किया जाता है,

प्राचीन काल से मनुष्य अपने जीवन मे सभी सुख को भोगने के बाद भी वह "सुख" नही अनुभव कर पाता है, जो "सुख" जिवन मे मीलने के बाद सुख की खोज ही समाप्त हो जाये इसी "शाश्वत सुख" की खोज मे मनुष्य प्राय "सदगुरु" रुपी अन्य माध्यमो का सहारा लेता था, जो "सदगुरु" समाज से ही विरकत हो गये तो वे समाज मे तो मीलेगे नही वे होते थे हिमालय की गुफाओ मे और सामान्य मनुष्य तो हिमालय की गुफाओ मे तो जा नही सकता था, इसलीये सामान्य मनुष्य ने एक नया मार्ग निकाला था, "कुंभ" मेले के अवसर पर हिमालय की गुफाओ मे निवास

कर रहे ऋषी मुनी स्नान करने को एक विशेष दिन अवश्य आते ही थे। और जिस ओर से पानी का प्रवाह होता था उसी स्थान पर वे आकर स्नान करते थे। और उन्होंने स्नान किया हुआ पानी से जब सामान्य मनुष्य स्नान करता था तो सामान्य मनुष्य को भी इच्छा करने पर "आत्मसाक्षात्कार" प्राप्त हो सकता था।

यह आत्मसाक्षात्कार उस मनुष्य को ही प्राप्त होता था जो आत्मसाक्षात्कार पाने का भाव लेकर ही नदी में स्नान करने जाता था, सारे संसार से विरक्त और मुक्त होकर जाता था सारे संसार के सुख भोगकर उस "आत्मसुख" की खोज मे जाता था जो सुख जिवन का "अंन्तीम सुख" है, जो सुख पाने के बाद मनुष्य सुख और दुख: से परे हो जाता है, पर "कुंभ" मेले मे ऐसा "सदगुरु" मिलना और उस सदगुरु के आभामंडल मे "आत्मसाक्षात्कार" की इच्छा से स्नान होना सभी संयोग की बात थी हो सकता है, यह इच्छा एक ही जन्म मे पुर्ण हो जाये और हो सकता है, अनेक जन्म इस "स्नान" के लीये लेना पडे।

सब कुछ मनुष्य की "आध्यात्मीक स्थिती" पर ही निर्भर होता है, "आत्मसाक्षात्कार" करा सके ऐसे सदगुरु तो प्रत्येक जन्म मे मनुष्य के जिवन काल मे होते ही है, पर आत्मसाक्षात्कार को ग्रहण कर सके ऐसा शरीर ही मनुष्य के पास नही होता है, "आत्मसाक्षात्कार" ग्रहण कर सके ऐसा "दिव्य शरीर" जन्मो जन्मो के बाद प्राप्त हो पाता है, ऐसे दिव्य शरीर को पाने के लिये आत्मा जन्मो जन्मो तक ऐसे पवीत्र और अनुकुल "माँ" "बाप" को खोजते रहती है, जो "माँ" "बाप" ऐसा दिव्य शरीर प्रदान कर सके बहुत कम ही पुण्य आत्मा होते है, जिन्हे ऐसे "माँ" "बाप" मील पाते है, जो ऐसा दिव्य शरीर प्रदान कर सके इस लीये जीसे भी अपने जिवनकाल मे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो उसने सर्व प्रथम अपने माँ बाप का आभारी होना चाहिये जिनके कारण आप को यह दिव्य शरीर मील पाया है, जिवन मे "दिव्य शरीर" मील पाना और जिवन मे "सदगुरु का सानिध्य" मील पाना दोनो ही "दुर्लभ" बाते है, इन दोनो का "संगम" एक ही जिवन मे हो पाना आवश्यक होता है, क्योकी परमात्मा तो कल भी था आज भी विद्यमान है, और कल

भी रहेगाँ। "परमात्मा" तो सदैव "सदगुरु" के माध्यम से इस जगत मे होना ही है, हाँ वह अगल बात है, की सदगुरु को ही उसके जिवनकाल मे कम ही लोग जान पाते है, है, पर जिवनकाल के बाद "सदगुरु" को ही लोग "परमात्मा" का दर्जा दे देते है, और सदगुरु को ही भगवान मानने लग जाते है, वास्तवक मे तो "सदगुरु" भी भगवान नही होता है, सदगुरु भी एक "सामान्य मनुष्य" होता है, लेकीन- सदगुरु के भितर का "कर्ता" का भाव नही होता वास्तव मे तो सदगुरु किसी के लीये कुछ भी कर ही नही सकता है, हाँ वह बात अलग है, की उसकी कृपा मे सब कुछ हो सकता है, वह तो एक रिकन पाईप (माध्यम) है, जिसके माध्यम से परमात्मा चैतन्य के रुप से बहते रहता है, परमात्मा- तो वास्तव मे "विश्वचैतन्य शक्ती" ही होती है, और सदगुरु रिकन पाईप के समान होता है, तो उसे- सदगुरु के माध्यम से परमात्मा प्रगट होता है, और चैतन्य का प्रवाह तो इतना अधीक होता है, की सामान्य मनुष्य को "सदगुरु" का शरीर दिखता ही नहीं है,

और सामान्य मनुष्य "सदगुरु" को ही भगवान मानने लग जाता है, "आध्यात्मीक प्रगती" की दृष्टी से यह आवश्यक भी है, एक तो कीसी को भी भगवान मानना हमारी "गुणग्राहकता" की रिसीव्हींग की चरमसीमा होती है,

दुसरा मेरा निजी अनुभव यह रहा है, की "जिस शरीर (सदगुरु) के माध्यम से "परमात्मा" चैतन्य के रुप में मुझ तक जिवन मे प्रथम बार पहुचा हो मैं भी स्वयम उसी माध्यम (सदगुरु) से परमात्मा तक पहुच सकता हुँ, यह "सामान्य" सी बात "एक क्षण" मे ही मेरे को समझ मे आ गयी थी"

और "एक क्षण" मे ही मैंने अपने गुरुदेव को ही "परमात्मा" मान लीया। और गुरुदेव मे ही चरणों पर चित्त रख कर सारी "आध्यात्मीक प्रगती" फीर होती चली गयी। मैंने आध्यात्मीक प्रगती के लीये कुछ भी जिवन मे "छोडा" नही है, हाँ वो अलग बात है, जो "आध्यात्मीक प्रगती" के लीये जरुरी नही था वह छुटता चला गया। अपने आप को यह समझ ही नही पाता की "आध्यात्मीक प्रगती" के लिये क्या आवश्यक है, और क्या अनावश्यक है

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

"गुरुचरण" पर केवल चित्त रख कर आगे जिवन मे चलता गया। तो अनावश्यक बाते छुटती चली गयी। जो मैने आध्यात्मिक प्रगती के लीये आवश्यक है, ऐसा "मान" कर रखा था।

भाषा, जाती धर्म देश, रंग, लींग इतने सारी दिवारे जो मैने अज्ञानतावश खडी कर के रखी थी वह सारी दिवारे ढह गयी क्योकी बाद मे जाना की इन सब का संमन्ध "शरीर" के साथ होता है। और शरीर ही नाशवान है, तो यह सब बाते शाश्वत कैसे हो सकती है, यह सब अनावश्यक बाते थी जो समय के साथ साथ जिवन से हटती चली गयी और "आत्मा" शुद्ध और शुद्ध होता चला गया। लेकीन परिवार नही छुटा क्योकी पत्नी की देखभाल से ही आध्यात्मीकता का "पौधा" आज तक "वटवृक्ष" हो गया। आज विश्व को "वटवृक्ष" तो दिख रहा है, पर वह बीज "शिवबाबा" नही दिखता है, और उस "बीज" को सालो अपनी मेहनत व सतत परिश्रम से जिस "माली" ने संभालकर रखा और सालो तक उस पौधे को "खाद" और "पानी" देता रहा वह "माली" भी (गुरुमाँ) नही दिखता है।

मेरा निजी अनुभव यह की सबसे आखरी छुटना है, परिवार का "लगाव" परीवार का अटैचमेंन्ट मेरा लडका मेरी लडकी मेरा पोता मेरी पोती यह सबसे कठीण अटैचमेंन्ट होता है,

इस बात को "साधु संन्यासी" भी जानते है, इसलीये वे सर्व प्रथम यही सब छोड देते है, लेकीन मैंने जिवन मे कुछ भी पकडा नही और कुछ भी छोडा नही "गृहस्थी" मीली तो उसे भी "स्विकार" कर लिया आत्मा की शुद्धता जैसे २ बढती है वैसे वैसे आप सब मे रहते है, पर कही भी नही रहते ऐसी स्थिती हो जाती है,

समय के साथ२ सब घटीत होने लग जाता है, अपने परिवार का अटैचमेन्ट "अंन्तीम" होता है, पिछले ६ माह पुर्व हुयी एक परीवार की घटना से वह "अंन्तीम अटैचमेंन्ट" भी अनायास छुट गया है, अब सभी बंन्धनो से अपने आप को मुक्त अनुभव करता हुं, इन सभी बन्धनो से मुक्त होने के लिये मैंने स्वंयम कुछ भी किया नही पर "गुरुकृपा" मे सब कुछ अनायास ही समय की आवश्यकता के अनुसार

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

हो गया है, यही कारण है की पिछले ६ माह से "गुरुकार्य" मे एक गती सी आ गयी है, और यही गती भविष्य मे भी रहने वाली है। अब साधको को मेरे साथ चलना नही "दौडनाँ" पडेगाँ। क्योकी अब जिवन "समय" कम और "कार्य" बहुत अधीक होना है।

"श्री गुरुशकती धाम" मे सदगुरु का सानीध्य और "कुंभ मेले" का स्वर्णीम अवसर पर गहनध्यान का अनुष्ठान यह "त्रिवेणी संगम" अनायास ही हो गया है, और महाशिवरात्री तक यह "चैतन्य का महाकुंभ" लगा ही रहने वाला है, यहाँ "दांडी" मे भी हिमालय से ऋषी मुनी इस त्रीवेणी संगम मे स्नान करने आने ही वाले है। और उनका चैतन्य का प्रभाव आप को अनुभव भी होगा। और दिखेगाँ भी है, इस त्रीवेणी संगम पर सामान्य से सामान्य मनुष्य भी "आत्मसाक्षात्कार" पाने की इच्छा से आये तो इस "चैतन्य के महाकुंभ" मे वह भी उसे प्राप्त हो सकता है।